5. संगठन कला, नेतृत्व कला और प्रशासन कला

(The Art of Organising, Leadership and Administration)

मनुष्य के जीवन की सफलता इसमें भी है कि वह कोई ऊँचा कार्य करे, कोई विशेष बात करके दिखाये। उसके लिए ज़रूरी यह होता है कि मनुष्य दूसरों को भी सहयोगी बनाये, उन्हें गठित करे। परन्तु बहुत-से मनुष्य अपने जीवन में कोई ऐसा महान् कर्त्तव्य कर नहीं पाते। उनमें कुछ विचार तो होते हैं परन्तु वे उन विचारों को क्रियान्विति का रूप नहीं दे सकते। अब विचार करने पर आप इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि इस क्षेत्र में सफलता के लिए मनुष्य में मुख्य रूप से छः बातों का होना आवश्यक है— (1) दूसरों को एक सुन्दर योजना देकर सहयोगी और साथी बनाने की योग्यता (2) उनमें उत्साह भरने की योग्यता और स्वयं में भी सदा उत्साह और प्रबल प्रेरणा (Insight and Intuition) का होना (3) तत्क्षण निर्णय कर सकना अर्थात् 'क्विक सिलवर' बुद्धि का होना तथा दूरन्देश होना (4) सबको मिलाने की योग्यता (5) व्यवस्था करने व कण्ट्रोल करने की योग्यता (6) सभी की बातों को अपने मन में समाने की योग्यता और उन्हें यथा-योग्य, यथा-शक्ति नये-नये प्रयास में लगाना।

अब एक चरित्रात्मक आन्दोलन अथवा जनकल्याण के कार्य में प्रबल अन्तःप्रेरणा (Intuition) और उसके लिए अदम्य उत्साह (Indomitable Spirit) उसी में ही हो सकता है जिसकी बुद्धि की लग्न कल्याणकारी प्रभु से हो। परमात्मा ही तो अथक और शक्तिशाली कल्याणकर्त्ता हैं। अतः उन्हीं से मन का नेह होने से ही मनुष्य में दूसरों के उत्थान के लिए अपार साहस, अटूट लगन (Dedication) और बिजली-जैसी स्फूर्ति हो सकती है। परमात्मा का सन्देश-वाहक बनने वाला मनुष्य ही सतत् कार्यशील (Alert) और जागरूक (Active) रह सकता है और जनता की सेवा में जी-जान लगाकर कृत्कार्य हो सकता है। योगी का परमात्मा में सम्पूर्ण निश्चय होता है और उस त्रिकालदर्शी के वरदान द्वारा वह दूरदर्शी भी होता है। इसलिए उसे अच्छे काम के लिए पहल करने (Initiative) में कोई संकोच नहीं होता और यही तो नेतृत्व के लिए ज़रूरी भी होता है। परम बुद्धिमान परमात्मा के साथ बुद्धि का योग होने से उसे सुन्दर-सुन्दर योजनायें सूझती हैं और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए उसे

मार्ग-प्रदर्शना भी मिलती है, वह दूसरों को भी मार्गदर्शन दे सकता है। इस प्रकार योग द्वारा ही नेतृत्व कला का विकास होता है और मनुष्य अधिकाधिक लोगों को सहयोगी और साथी बनाकर उन्हें एक प्रेममय व्यवस्था में बाँधकर, दिव्य धारणा के नियन्त्रण में लाकर उनसे भी ऊँचा कर्त्तव्य करा डालता है और स्वयं भी कोई महान् कार्य कर गुज़रता है।

जो योगी न हो वह तो अपनी मनमत पर ही चलेगा, कल्याणकारी परमात्मा का सन्देश, आदेश, निर्देश तो उसे प्राप्त ही नहीं होगा, तब भला वह दूसरों का कल्याण कैसे कर सकेगा? मार्ग में आने वाली सभी कठिनाइयों का सामना करने के लिए जो असाधारण साहस, चातुर्य, सामर्थ्य, सूझ और युक्ति-कौशल्य चाहिये वह उसमें कहाँ से आयेगा? जब उसका अपना जीवन ही इतना आगे नहीं बढ़ रहा होगा तो वह दूसरों की अगवाई (Lead) कैसे करेगा? निश्चय ही वह संसार में आध्यात्मिक क्रान्ति लाने वाले अथवा युग-परिवर्तन करने वाले किसी अहिंसात्मक आन्दोलन का कुशल नेता नहीं बन सकता, चरित्र की सुगन्धि से भरे मानवी पुष्पों को एक माला में पिरोने अथवा व्यवस्थित करने का महान् कार्य वह नहीं कर सकता, हतोत्साहित एवं विकारों के प्रहारों से निष्प्राण हुए मानव मस्तिष्क में वह नयी रूह नहीं फूँक सकता, एक ओजस्वी एवं निर्मल ज्ञानधारा को प्रवाहित करने में वह भगीरथ का काम नहीं कर सकता। उसका उच्छृङ्खल मन अथवा संसारिक मस्तिष्क इस संसार में हलचल मचाने वाली अथवा कल-कल करने वाली कोई कल, कोई कील, कोई काँटा अथवा कोई कृत्रिम साधन बना डाले सो बात अलग है।

***